भारतीय दर्शन के आस्तिक तथा नास्तिक संप्रदाय —

भारतीय दर्शन के अनेक संप्रदाय हैं, किंतु इनमें नौ संप्रदायों को मौलिक रूप से महत्वपूर्ण माना गया है। इन नौ संप्रदायों को भी आस्तिक (orthodox) और नास्तिक (heterodox), दो वर्गों में रखा गया है। 'आस्तिक' और 'नास्तिक' के तीन अर्थ बताए जाते हैं —

(i) आस्तिक वह है, जो ईश्वर में विश्वास रखता है और 'नास्तिक' वह है, जो ईश्वर में विश्वास नहीं रखता। यह आस्तिक और नास्तिक का साधारण अर्थ है।

(ii) महान वैयाकरण पाणिनी के अनुसार, 'आस्तिक' का अर्थ है 'परलोक में विश्वास रखनेवाला' और नास्तिक का अर्थ है 'परलोक में विश्वास न रखनेवाला'।

(iii) 'आस्तिक' शब्द का अर्थ है 'वेदों की सर्वथा निर्दोषिता और उनकी चरम प्रमाणिकता में विश्वास रखनेवाला'। इसी प्रकार, वेदों की निर्दोषिता एवं चरम प्रामाणिकता में जो अविश्वास रखते हैं, वे 'नास्तिक' हैं।

भारतीय दर्शन का आस्तिक और नास्तिक संप्रदायों में विभाजन तीसरे अर्थ में हुआ है। आस्तिक संप्रदाय वह है, जो वेदों की प्रामाणिकता में विश्वास रखता हो और नास्तिक संप्रदाय वह है, जो वेदों की प्रामाणिकता में संदेह रखता हो। इस अर्थ को शायद सबसे अधिक समर्थन स्मृतिकार मनु से मिला, जिन्होंने घोषणा की थी कि 'वेदनिंदक ही नास्तिक है' (नास्तिको वेदनिन्दकः)। इस अर्थ ने अन्य दोनों अर्थों को गौण बना दिया। भारतीय दर्शन में आस्तिकता की कसौटी 'वेदों की चरम प्रामाणिकता की स्वीकृति' मान ली गई है। इस अर्थ में भारतीय दर्शन के छः

संप्रदाय आस्तिक और तीन संप्रदाय नास्तिक कहे जाते हैं। आस्तिक संप्रदाय हैं — सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत। ये 'षड्दर्शन' कहलाते हैं। नास्तिक संप्रदाय हैं- चार्वाक, जैन और बौद्ध। आस्तिक संप्रदाय में मीमांसा और वेदांत वेदों की प्रामाणिकता में पूर्ण विश्वास रखते हैं। शेष चार आस्तिक संप्रदाय वेदसम्मत विशेष अर्थ में कहे जाते हैं। नास्तिक संप्रदायों में चार्वाक हर दृष्टिकोण से नास्तिक कहा जा सकता है। यह ईश्वर का खंडन करता है, वेदों की प्रामाणिकता को नहीं मानता और परलोकवाद में विश्वास रखता ही नहीं है।

'वेदों की प्रामाणिकता' की आस्तिकता की कसौटी मानने से भारतीय दर्शन में वेदों की महत्ता का अंदाजा लगाया जा सकता है। इस कसौटी की स्वीकृति के मूल में वेदों के प्रति पूर्वाग्रह स्पष्ट दीख पड़ता है। बौद्धों और जैनों के भी अपने धार्मिक ग्रंथ थे और उनकी दृष्टि में षड्दर्शन ही नास्तिक कहे जा सकते हैं।

* भारतीय दर्शन के आस्तिक एवं नास्तिक संप्रदायों को निम्नलिखित ढंग से संक्षेप में रखा जा सकता है —

भारतीय दर्शन

आस्तिक संप्रदाय (orthodox schools)	नास्तिक संप्रदाय (heterodox schools)
सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक मीमांसा और वेदांत	चार्वाक, जैन, बौद्ध